रहस्यवाद और छायावाद —

(1) रहस्यवाद और छायावाद के बहुत से तत्व समान है। लगभग प्रायः जितने भी छायावादी कवि है वे सभी रहस्यवादी भी है। ऐसी स्थिति में इन दोनों के बीच एक व्यवस्थित विभाजन की रेखा खींचना दुष्कर रहा है। फिर भी इनके सूक्ष्म भेदों को स्पष्ट किया जा सकता है। इन दोनों की शैली तो एक है। मगर रहस्यवाद छायावाद से अधिक सूक्ष्म और भावमूलक है। प्रकृति के पदार्थ दोनों में समान रूप से व्याप्त होकर आए है। परन्तु छायावाद में वे स्वतंत्र वर्णन के होते हैं और रहस्यवाद में वे वर्ण्य विषय न रहकर किसी भाव को अभिव्यक्त करने में सहायक हुए हैं। अज्ञात सत्ता के अव्यक्त इंगितों को संकेत देने वाले होते हैं। इसलिए रहस्यवाद में भी प्रकृति का इतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना छायावाद में है। कवि सम्पूर्ण प्रकृति में उसी अव्यक्त सत्ता का आभास पाता है। जायसी ने तो प्रकृति को "उसके" विरह में रोता हुआ दिखाया ही है।

(ii) छायावादी और रहस्यवादी दोनों ही काव्य में शृंगार प्रधान है। छायावाद में संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण होता है। जबकि रहस्यवाद में सिर्फ वियोग पक्ष ही चित्रित हुआ है। यद्यपि कबीर ने कहीं कहीं मिलन का भी चित्रण किया है। रहस्यवादी कवि का विरह

प्रकृति व्यापी है। विरह की भीषण ज्वाला कवि के उस आलिंग प्रिय के प्रति प्रेमोन्मुख रखती है।
"भीषण ज्वाला जलाती है ईंधन होता दृग जल का,
यों व्यर्थ साँस चल चलकर करती है काम अनिल का।"

प्रसाद ——

काव्य की जीवन संध्या में इसका विपरीत अद्भुत और अनुपम सौन्दर्य से आवृत होकर आया जिसमें रहस्य था—

"आँखें मुख पर घूँघट डाले, आँचल में दीप छिपाये
जीवन की उस गोधूली में, कौतूहल से तुम आये।।"

(iii) रहस्यवाद में अद्वैत दर्शन का प्रभाव है। इसका सम्बन्ध आत्मा परमात्मा तथा जगत से है। किन्तु छायावाद परमात्मा को छोड़ देता है। इसका सम्बन्ध केवल आत्मा और जगत से है।

(iv) रहस्यवाद में आत्मा के साथ परमात्मा के सम्बन्ध की अभिव्यक्ति की जाती है। जबकि छायावाद आत्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है।

(v) छायावादी प्रकृति के सभी उपादानों में एक प्राण चेतना के दर्शन करता है। और उसके साथ आत्मीयता स्थापित करता है। जबकि रहस्यवादी कवि को प्रकृति के निःसीम वैभव में परम सत्ता के दर्शन होते हैं।

(vi) रहस्यवाद इस दृश्य समान जगत की उपेक्षा करता है। जबकि छायावाद में सारी प्रकृति और सम्पूर्ण विश्व को भी उस अखंड चेतन सत्ता का प्रतिबिम्बित स्वीकार किया जाता है।

(vii) रहस्यवाद में जीव की स्थिति अस्वीकृत होती जबकि छायावाद में जीव की भिन्नता स्वीकार की गई है। वाजपेयी के अनुसार छायावाद के कवि प्रकृति में व्याप्त अखंड असीम चेतना के साथ अपने भीगे हृदय का तादात्म्य में अनुभव करता है। और रहस्यवादी कवि उस अखंड

Scanned with CamScanner

असीम सत्ता के प्रति आत्म निवेदन।
(8) छायावाद में अव्यक्त सत्ता के प्रति केवल जिज्ञासा होती है सत्ता के प्रति केवल जिज्ञासा होती है। रहस्यवाद में उस सत्ता के प्रति प्रेम की व्यंजना।

रहस्यवाद तथा छायावाद का अंतर स्पष्ट करते हुए गंगा प्रसाद पांडेय ने लिखा है — "वास्तव में दोनों एक दूसरे के इतने निकट और एक दूसरे के इतने समान हैं कि दोनों के बीच एक विभाजक रेखा बनाए बिना इनका स्वतंत्र अस्तित्व स्पष्ट नहीं हो सकता।

रहस्यवाद के विषय आत्मा परमात्मा और जगत है। छायावाद परमात्मा को छोड़ देता है। वह केवल आत्मा और जगत के प्रदेश में ही विचरण करता है.....

छायावाद में जिस प्रकार एक जीवन के साथ दूसरे जीवन की अभिव्यक्ति है अथवा आत्मा के साथ आत्मा का संबंध है तो रहस्यवाद में आत्मा के साथ परमात्मा का। एक पुष्प को देखकर जब हम अपने को जीवन सा सप्राण पाते हैं तो यह हमारी छायावाद की अभिव्यक्ति हुई किन्तु उसी पुष्प में हम किसी परम चेतना का आभास या विकास पाते हैं तो हमारी यह अभिव्यक्ति रहस्यवादी भावना या रहस्यवाद की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत होगी"।

यही रहस्यवाद और छायावाद का मोटा सा अंतर है। रहस्यवादी फूल और कलियों में जीवन का कंपन न देखकर अपने प्रियतम की रूप माधुरी देखता है।–

"सुमन में तेरा मधुर विकास
कली में नव-नव स्फुट हास"।

इन्हीं सुमन और कलिका को छायावादी एक आत्मा की समान लहर से अनुप्राणित पाकर सप्राण समझ लेता है।

वह इन से मधुर लाभ करके सजाता है। सिसिम को सजीव बनाकर उसी का आलिंगन पाना चाहता है।

"आओ आओ हे कुसुम कानने
तत्पर हो सुमन अंगन जागे
वो किया मैं मोर गुंजारे
कोमल स्वर में कहे स्वागत
हे सखि! आओ बांह खोल हम
लगकर गले जुड़ा ले प्राण"।

— पंत

इस प्रकार छायावाद के योग से रहस्यवाद ने हिन्दी को जो कुछ दिया है वह चिर स्थायी साहित्य के रूप में अमर रहेगा।

कबीर और जायसी को स्मृत नहीं किया जा सकता।

जैसे आज के इस अंगत शील युग में मानव का जितना कल्याण रहस्यवाद कर सकता है उतने कल्याण की आशा अन्य किसी प्रकार सम्भव नहीं है किन्तु फिर भी यह आज विश्व वांग्मय से उठता जा रहा है। एक आलोचक का कथन है —

"रहस्यवाद की प्राचीन धारा ने जिस प्रकार भक्तिकाल में वाद स्वरूप पूरी जीवन की आभा का संचार किया उसी प्रकार आज का रहस्यवाद भौतिक संघर्ष से पीड़ित मानव हृदय को शांति पहुंचाने में समर्थ हुआ"।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रहस्यवादी काव्य ने छायावाद के साथ हिन्दी को सुन्दर उन्नत साहित्य दिया जिसका साहित्यिक मूल्य सदैव वह अमर रहेगा॥

Scanned with CamScanner